पाठ - 4
नुबुवत

الدرس الرابع - هندي
النبوة

रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम जस ही चालीस साल का उम्र क क़राब हुए, आप मक्का के मश्रिक़ में मौजूद पहाड़ की हिरा नामक गुफ़ा के अन्दर एकान्त में अकेले रहने लगे। आप कई दिन और कई रातें उसी गुफ़ा में गुज़ारते और अल्लाह की इबादत करते। इक्कीसवीं रमज़ान को आप गुफ़ा ही में थे जबकि आपकी उम्र चालीस साल थी आपकी सेवा में जिबरईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और आप से कहा ''पढ़िए आपने कहाः ''मैं पढ़ना नहीं जानता। जिबरईल अलैहिस्सलाम ने यही बात दूसरी और तीसरी बार कही। तीसरी बार उन्होंने कहाः पढ़िए...

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ(١) خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ(٢) اقْرَأْ وَرَبُّكَ الأَكْرَمُ(٣) الَّذِي عَلَّمَ بِالقَلَمِ(٤) عَلَّمَ الإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ(٥)

इक़रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी खलक़, खलक़ल इन्सान मिन अलक़, इक़रा वरब्बुकल अकरमुल्लज़ी अल्लम बिल क़लम, अल्लमल इन्सान मालम यालम

वहां से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर वापस आए। इस घटना के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिरा गुफ़ा में ठहरने की हिम्मत नहीं कर पाए। अतः घर लौट आए। अपनी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके पास गए। उस समय आपका दिल कांप रहा था। आपने कहा : ''मुझे चादर उढ़ादो, मुझे चादर उढ़ा दो खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने आप पर चादर डाल दी। कुछ देर बाद आप की घबराहट कम हुई दिल से डर जाता रहा। आपने खदीजा रजियल्लाहु अन्हासे पूरी घटना बयान की और कहा ''मुझे अपनी जान के तअल्लुक़ से ख़तरा व अन्देशा होने लगा था खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने कहाः ''कदापि नहीं, अल्लाह आपको कभी रुसवा नहीं कर सकता, आप रिश्ते नाते को जोड़ते हैं, लाचारों की मदद करते हैं, ग़रीबों को नवाज़ते हैं, मेहमानों की मेहनवाज़ी करते हैं और मुसीबतों में लोगों के काम आते हैं।

कुछ मुद्दत के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर हिरा गुफ़ा पर पहुंचे ताकि आप अपनी इबादत को जारी रख सकें। जब इबादत कर चुके तो मक्का वापस होने के इरादे से गुफ़ा से निकले। जब बीच वादी में पहुंचे तो आपको जिबरईल अलैहिस्सलाम दिखाई दिए। वे आसमान व ज़मीन के बीच कुर्सी पर बैठे हुए थे। इस अवसर पर उन्होंने आप तक यह वहय पहुंचायीः

يَاأَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ* قُمْ فَأَنْذِرْ* وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ* وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ* وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ

या अय्युहल मुद्दस्सिर. क़ुम फ़अन्ज़िर वरब्बक फ़कब्बिर. व सियाबक फ़तहहिर. वर्रुज ज़ फ़हजुर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अपनी दावत आरंभ की तो ईमान की दावत को सबसे पहले आपकी योग्य और अक़लमन्द पत्नी खदीजा ने स्वीकार किया। उन्होंने अल्लाह के एक होने का इक़रार किया और अपने पति की नुबुवत की गवाही दी। उन्होंने सबसे पहले इस्लाम स्वीकार किया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जिगरी दोस्त अबू बक्र से इस दावत को बयान किया तो वे भी ईमान ले आए और खुलकर तसदीक़ की। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा जान, जिन्होंने आपकी मां और दादा की वफ़ात के बाद आपकी किफ़ालत और लालन पालन की ज़िम्मेदारी संभाली थी, उनके एहसानों की भरपाई करने के मक़सद से उनके बच्चों में से अली रजियल्लाहु अन्हु को पालने के मकसद से अपने पास ही रखा था, अतएव अली रजियल्लाहु अन्हु ने ईमान के माहौल में आँखें खोलीं और इस दावत को स्वीकार किया। उसके बाद खदीजा के सेवक ज़ैद बिन हारिसा ने इस्लाम स्वीकार किया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लगातार खुफ़िया तौर पर दावत देते रहे और लोग इस्लाम को पोशीदा रखते रहे। क्योंकि जिसके इस्लाम स्वीकार करने की बात कुरैश को मालूम हो जाती, उसे वे लोग इस्लाम से अलग करने के लिए सख़्त क़िस्म की यातनाएं दिया करते थे